International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July- December 2018, Submitted in September 2018, iajesm2014@gmail.com

"साहित्य, समाज, मीडिया और प्रोद्योगिकी के बदलाव के दौर"

Usha Sharma, Assistant Professor, Shiva College Of Education, Lalgarh Jattan, Sri Ganganagar

साहित्य समाज का दर्पण है । एक साहित्यकार समाज की वास्तविक तस्वीर को सदैव अपने साहित्य में उतारता रहा है । मानव जीवन समाज का ही एक अंग है । मनुष्य परस्पर मिलकर समाज की रचना करते हैं । इस प्रकार समाज और मानव जीवन का संबंध भी अभिन्न है । समाज और जीवन दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं । आदिकाल के वैदिक ग्रंथों व उपनिषदों से लेकर वर्तमान साहित्य ने मनुष्य जीवन को सदैव ही प्रभावित किया है ।

दूसरे शब्दों में, किसी भी काल के साहित्य के अध्ययन से हम तत्कालीन मानव जीवन के रहन–सहन व अन्य गतिविधियों का सहज ही अध्ययन कर सकते हैं या उसके विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । एक अच्छा साहित्य मानव जीवन के उत्थान व चारित्रिक विकास में सदैव सहायक होता है ।

साहित्य से उसका मस्तिष्क तो मजबूत होता ही है साथ ही साथ वह उन नैतिक गुणों को भी जीवन में उतार सकता है जो उसे महानता की ओर ले जाते हैं । यह साहित्य की ही अद्भुत व महान शक्ति है जिससे समय–समय पर मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलते हैं ।

साहित्य ने मनुष्य की विचारधारा को एक नई दिशा प्रदान की है । दूसरे शब्दों में, मनुष्य की विचारधारा परिवर्तित करने के लिए साहित्य का आश्रय लेना पड़ता है । आधुनिक युग के मानव जीवन व उनसे संबंधित दिनचर्या को तो हम स्वयं अनुभव कर सकते हैं परंतु यदि हमें प्राचीन काल के जीवन के बारे में अपनी जिज्ञासा को पूर्ण करना है तो हमें तत्कालीन साहित्य का ही सहारा लेना पड़ता है।

वैदिक काल में भारतीय सभ्यता अत्यंत उन्नत थी । हम अपनी गौरवशाली परंपराओं पर गर्व करते हैं । तत्कालीन साहित्य के माध्यम से हम मानव जीवन संबंधी समस्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा उन जीवन मूल्यों का अध्ययन कर सकते हैं जिन्हें आत्मसात् करके तत्कालीन समाज उन्नत बना ।

इस प्रकार जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है । साहित्यकार अपने जीवन में जो दुःख, अवसाद, कटुता, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, दया आदि का अनुभव करता है उन्हीं अनुभवों को वह साहित्य में उतारता है । इसके अतिरिक्त जो कुछ भी देश में घटित होता है जिस प्रकार का वातावरण उसे देखने को मिलता है उस वातावरण का प्रभाव अवश्य ही उसके साहित्य पर पड़ता है ।

यदि हम इतिहास के पृष्ठों को पलट कर देखें तो हम पाते हैं कि साहित्यकार के क्रांतिकारी विचारों ने राजाओं–महाराजाओं को बड़ी–बड़ी विजय दिलवाई है । अनेक ऐसे राजाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने स्वयं तथा अपनी सेना के मनोबल को उन्नत बनाए रखने के लिए कवियों व साहित्यकारों को विशेष रूप से अपने दरबार में नियुक्त किया था ।

मध्यकाल में भूषण जैसे वीररस के कवियों को दरबारी संरक्षण एवं सम्मान प्राप्त था । बिहारीलाल ने अपनी कवित्व–शक्ति से विलासी महाराज को उनके कर्तव्य का भान कराया था । संस्कृत के महान साहित्यकारों कालीदास और बाणभट्ट को अपने राजाओं का संरक्षण प्राप्त था ।

" नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल । अली, कली सी सौं बँध्यो आगैं कौन हवाल ।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि जीवन और साहित्य को पृथक् नहीं किया जा सकता । उन्नत साहित्य जीवन को वे नैतिक मूल्य प्रदान करते हैं जो उसे उत्थान की ओर ले जाते हैं । साहित्य के विकास की कहानी वास्तविक रूप में मानव सभ्यता के विकास की ही गाथा है।

जब हमारा देश अंग्रेजी सत्ता का गुलाम था तब साहित्यकारों की लेखनी की ओजस्विता राष्ट्र के पूर्व गौरव और वर्तमान दुर्दशा पर केंद्रित थी । इस दृष्टि से साहित्य का महत्व वर्तमान में भी बना हुआ है । आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं को अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दे रहे हैं ।

जीवन का अर्थ है 'गतिशीलता' । प्राणिमात्र को हम तब तक जीवित मानते हैं जब तक उसमें आतरिक और बाह्य गतियाँ विद्यमान रहती हैं । जब गति ठहर जाती है तब उसे निर्जीव अथवा 'मृत' घोषित कर दिया जाता है । इसी प्रकार साहित्य में भी जब तक गति रहती है तब तक वह सजीव माना जाता है ।

साहित्य की गतिशीलता और प्रगति जब तक रहती है, वह जीवित कहलाता है और जब उसका विकास रुक जाता है, तब उसे 'मृत' मान लिया जाता है । मानव–समाज के प्रारंभ से अब तक विश्व में न जाने कितने साहित्यों का जीवन समाप्त हो चुका और अब भी कितने जीवित हैं तथा कितने भविष्य में आनेवाले हैं ।

प्रकृति में गतिक्षविकास है, परिवर्तनशीलता है । अतः वह सजीव है । साहित्य भी प्रकृति की अनुकृति है, जिसमें प्रगति, परिवर्तन और विकास अनिवार्य है, जो सजीव साहित्य का लक्षण है । साहित्य–निर्माण का उद्देश्य मानव–उपयोग, मानव का कल्याण और मनोरंजन है जब तक साहित्य जन–साधारण के संघर्ष में रहता है अर्थात् सामान्य–जन अपने दैनिक जीवन में उसका उपयोग करते रहते हैं तब तक उसमें निरंतर नवीन प्रयोग होते रहते हैं, किंतु जब वह विद्वानों के विलास का साधन बन जाता है तब उसकी गतिशीलता का हास होने लगता है।

वह केवल विद्वानों की मंडली में सम्मिलित हो जाता है । कालांतर में वैसा साहित्य अपनी गतिशीलता खोकर 'मृत साहित्य' कहा जाने लगता है । उसमें प्रकृति को नवीन रूप में व्यक्त करने की शक्ति नष्ट हो जाती है । जिस समाज का रिश्ता ऐसे निर्जीव साहित्य मात्र से रहता है, वह 'निर्जीव समाज' कहलाता है।

प्रायः सभी धर्मों में उनका धार्मिक साहित्य ही प्राचीन साहित्य माना जाता है । वैदिक साहित्य को विश्व का प्राचीनतम साहित्य अगर माना जाए तो कहना होगा कि उसके पूर्व का समाज और साहित्य अतीत के गर्भ में विलीन हो गए । भारत के पूर्व–इतिहास काल में ऋषियों ने तत्कालीन समाज और जीवन–क्रम का जो वर्णन किया, वह 'वैदिक साहित्य' कहलाया। उसके हास के साथ संस्कृत–साहित्य का आविर्भाव हुआ । आज उसे सजीव साहित्य नहीं कहा जा सकता है । उसके स्थान पर आज देशीय भाषा साहित्य विकसित हो रहा है, जो जीवंत और गतिशील है । अरबी, फारसी, लैटिन, रोमन आदि प्राचीन पाश्चात्य साहित्यों की भी यही स्थिति है। आधुनिक भारतीय भाषा–साहित्यों की तरह अन्य राष्ट्रों में भी अंग्रेजी जर्मन, फ्रेंच, उर्दू रूसी, चीनी, बर्मी, जापानी आदि सैकड़ों भाषाओं में गतिशील साहित्य पनप रहा है, जिनके रूपों से निरंतर परिवर्तन अथवा नवीनता देखी जा सकती है । छठी सदी में जब पाणिनि ने संस्कृत को व्याकरणबद्ध किया तब संस्कृत–साहित्य निर्माण में गतिशीलता का हास होने लगा तथा देशी भाषा–साहित्यों में जीवन–तत्त्व पुष्ट होने लगा। चूँकि संस्कृत में शब्द का निर्माण तथा संस्कृति के प्रदर्शन की क्षमता थी, इसलिए वह मृत साहित्य होने से बच पाई । वर्तमान में हिंदी, बँगला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उड़िया तथा

दक्षिणी भाषाएँ साहित्य संपन्न होती जा रही हैं । साहित्य मानव–जीवन का अभिन्न अंग है। मानव–प्रवृत्तियों और प्रकृति के नित परिवर्तित नाना रूपों का चित्रण ही साहित्य का जीवन है। पावस–ऋतु में इंद्रधनुश् के रंगों पर सबकी मुग्ध नजर पड़ती ही है। महाकवि भारवि एक निराला इंद्रधनुष 'किरातार्जुनीयम्' में प्रस्तुत करते हैं: 'नीले आकाश में हरे रंग के तोते अपनी लाल चोंचों में धान की पीली बालियाँ लेकर धनुषाकार पंक्तियों में उड़े जा रहे हैं।'

प्रकृति का कैसा गतिशील चित्र है ! महाकवि बिहारी के दोहे में भी ऐसा ही चित्रित है–

'अधरदृअधर हरि के परत ओठदृदीठ परजोति । हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्रधनुष घुति होति ।।'

श्रीकृष्ण के अरुण अधरों पर 'हरी बाँसुरी' बज रही है । बजाते समय जरा सिर के झुकने पर काली पुतली तथा पीतांबर की आभा भी बाँसुरी पर पड़ रही है । यों गाता हुआ इंद्रधनुष प्रकट है । इसे कहते हैं, सजीव साहित्य । इस प्रकार जीवन को नवोन्मेष जिस साहित्य की गद्य–पद्य विधाओं से प्राप्त होता है, वही साहित्य गतिशील तथा जीवंत कहलाता है।

लोकतांत्रिक देशों में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्रियाकलापों पर नजर रखने के लिये मीडिया को ''चौथे स्तंभ'' के रूप में जाना जाता है। 18वीं शताब्दी के बाद से, खासकर अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन और फ्राँसीसी क्रांति के समय से जनता तक पहुँचने और उसे जागरूक कर सक्षम बनाने में मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका अदा करें तो किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्त्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है। अगर हम देखें कि समाज किसे कहते हैं तो यह तथ्य सामने आता है कि लोगों की भीड़ या असंबंद्घ मनुष्य को हम समाज नहीं कह सकते हैं। समाज का अर्थ होता है संबंधों का परस्पर ताना–बाना, जिसमें विवेकवान और विचारशील मनुष्यों वाले समुदायों का अस्तित्व होता है।

मीडिया एक समग्र तंत्र है जिसमें प्रिंटिंग प्रेस, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, रेडियों, सिनेमा, इंटरनेट आदि सूचना के माध्यम सम्मिलित होते हैं। अगर समाज में मीडिया की भूमिका की बात करें तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज में मीडिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है एवं उसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन के दौरान समाज पर उसका क्या सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

प्रभाव पर गौर करने पर स्पष्ट होता है कि मीडिया की समाज में शक्ति, महत्ता एवं उपयोगिकता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभावों में काफी अभिवृद्धि हुई है लेकिन साथ–साथ इसके नकारात्मक प्रभाव भी उभर कर सामने आए हैं।

मीडिया ने जहाँ जनता को निर्भीकता पूर्वक जागरूक करने, भ्रष्टाचार को उजागर करने, सत्ता पर तार्किक नियंत्रण एवं जनहित कार्यों की अभिवृद्धि में योगदान दिया है, वहीं लालच, भय, द्वेष, स्पर्द्धा, दुर्भावना एवं राजनैतिक कुचक्र के जाल में फंसकर अपनी भूमिका को कलंकित भी किया है। व्यक्तिगत या संस्थागत निहित स्वार्थों के लिये यलो जर्नलिज़्म को अपनाना, ब्लैकमेल द्वारा दूसरों का शोषण करना, चटपटी खबरों को तवज्जों देना और खबरों को तोड़–मरोड़कर पेश करना, दंगे भड़काने वाली खबरे प्रकाशित करना, घटनाओं एवं कथनों

को द्विअर्थी रूप प्रदान करना, भय या लालच में सत्तारूढ़ दल की चापलूसी करना, अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा और महिमामंडन करना और किसी दूसरे की आलोचना करना जैसे अनेक अनुचित कार्य आजकल मीडिया द्वारा किये जा रहे हैं। दुर्घटना एवं संवेदनशील मुद्दों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करना, ईमानदारी, नैतिकता, कर्त्तव्यनिष्ठा और साहस से' संबंधित खबरों को नजरअंदाज करना आजकल मीडिया का एक सामान्य लक्षण हो गया है। मीडिया के इस व्यवहार से समाज में अव्यवस्था और असंतुलन की स्थिति पैदा होती है।

प्रिंट मीडिया और टी.वी. एवं सिनेमा के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति का आगमन और प्रसार हो रहा है जिससे समाज में अनावश्यक फैशन, अश्लीलता, चोरी, गुंडागर्दी जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है। इस पतन के कारण युवा पीढ़ी भी पतन के गर्त में धँसती जा रही है।

इंटरनेट के माध्यम से असामाजिक क्रियाकलाप युवाओं तक पहुंच रहे है जिससे उनमें नैतिकता, संस्कृति और सभ्यता की लगातार कमी आती जा रही है। इन सबको देखते हुए मीडिया की भूमिका पर चर्चा करना आज आवश्यक हो गया है।

मीडिया की भूमिका यथार्थ सूचना प्रदायक एजेंसी के रूप में होनी चाहिये। मीडिया द्वारा समाज को संपूर्ण विश्व में होने वाली घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसलिये मीडिया का यह प्रयास होना चाहिये कि ये जानकारियाँ यथार्थपरक हो। सूचनाओं को तोड़–मरोड़कर या दूषित कर प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं होना चाहिये। समाज के हित एवं जानकारी के लिये सूचनाओं को यथावत एवं विशुद्ध रूप में जनता के समक्ष पेश करना चाहिये। मीडिया का प्रस्तुतीकरण ऐसा होना चाहिये जो समाज का मार्गदर्शन कर सके। खबरों और घटनाओं का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार हो जिससे जनता का मागदर्शन हो सके। उत्तम लेख, संपादकीय, ज्ञानवद्र्धक सूचनाएँ, श्रेष्ठ मनोरंजन आदि सामग्रियों का खबरों में समावेशन होना चाहिये तभी समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकेगी।

मीडिया समाज को अनेक प्रकार से नेतृत्व प्रदान करता है। इससे समाज की विचारधारा प्रभावित होती है। मीडिया को प्रेरक की भूमिका में भी उपस्थित होना चाहिये जिससे समाज एवं सरकारों को प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त हो। मीडिया समाज के विभिन्न वर्गों के हितों का रक्षक भी होता है। वह समाज की नीति, परंपराओं, मान्यताओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति के प्रहरी के रूप में भी भूमिका निभाता है। पूरे विश्व में घटित विभिन्न घटनाओं की जानकारी समाज के विभिन्न वर्गों को मीडिया के माध्यम से ही मिलती है। अतः उसे सूचनाएँ निष्पक्ष रूप से सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करनी चाहिये।

मीडिया अपनी खबरों द्वारा समाज के असंतुलन एवं संतुलन में भी बड़ी भूमिका निभाता है। मीडिया अपनी भूमिका द्वारा समाज में शांति, सौहार्द, समरसता और सौजन्य की भावना विकसित कर सकता है। सामाजिक तनाव, संघर्ष, मतभेद, युद्ध एवं दंगों के समय मीडिया को बहुत ही संयमित तरीके से कार्य करना चाहिये। राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं एकता की भावना को उभरने में भी मीडिया की अहम भूमिका होती है। शहीदों के सम्मान में प्रेरक उत्साहवर्द्धक खबरों के प्रसारण में मीडिया को बढ़–चढ़कर हिस्सा लेना चाहिये। मीडिया विभिन्न सामाजिक कार्यों द्वारा समाज सेवक की भूमिका भी निभा सकता है। भूकंप, बाढ़ या अन्य प्राकृतिक या मानवकृत आपदाओं के समय जनसहयोग उपलब्ध कराकर मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। मीडिया को सद्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन हेतु भी आगे आना चाहिये।

मीडिया की बहुआयामी भूमिका को देखते हुए कहा जा सकता है कि मीडिया आज विनाशक एवं हितैषी दोनों भूमिकाओं में सामने आया है। अब समय आ गया है कि मीडिया

अपनी शक्ति का सदुपयोग जनहित में करे और समाज का मागदर्शन करे ताकि वह भविष्य में भस्मासुर न बन सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1. स्ंदहनंहम व छिमू डमकपं . स्मअ डमदवअपबीए डप्ज च्तमे ब्उइतपकहम .2001

2. नया मीडिया अध्ययन और अभ्यास, शालिनी जोशी, शिवप्रसाद जोशी पेंगुइन प्रकाशन–2013,

3. न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषाई चुनौतियाँ और संभावनाएँ, संपादक आर. अनुराधा, राधा प्रकाशन–2012.

4. नागरिक पत्रकारिता का प्रातःकाल, वागर्थ, अंक 203 जून 2012